नसीब

अक्सर छात्र अपने भविष्य को लेकर चिंतित होते हैं कि उनकी पढ़ाई कैसी होगी। परीक्षा में नम्बर्स बाढ़ियाँ आएंगे कि नहीं आएंगे। वे हमेशा इसी चिंता में डूबे रह जाते हैं और अंततः असफल हो जाते हैं।

आज की **कहानी** इसी पर आधारित है। **भगवान श्रीकृष्ण** ने भी कहा है, " **कर्म करो, फल की चिंता मत करो**। " जो नसीब में होगा वह मिलेगा ही, लेकिन सब कुछ नसीब के भरोसे मत छोडो। कर्म तो करना ही पडेगा। तो आईये पढ़िए यह **प्रेरणादायक हिंदी कहानी।**

एक राज्य में एक राजा सुखपूर्वक अपना राज्य चलाते थे। उनके राज्य में प्रजा काफी खुश थी। राजा बहुत ही **न्यायप्रिय** थे, लेकिन उन्हें एक दुःख था।

उनके पुत्र अंशुमन पर बचपन से ही एक दुष्ट सांप का साया था। वह दुष्ट सर्प अंशुमन के शरीर में प्रवेश कर गया था और उसे छोड़ने का नाम ही नहीं ले रहा था।

राजा ने बहुत कोशिश की लेकिन उन्हें कोई सफलता नहीं मिली। धीरे - धीरे राजकुमार अंशुमन बड़ा हुआ और उसके साथ ही उसकी समस्या भी बड़ी हो गयी।

अंशुमन इस कारण से बहुत निराश रहता था और एक दिन वह महल छोड़कर चला गया। इससे राजा बड़े ही दुखी हुए। चलते - चलते अंशुमन एक दुसरे राज्य में जा पहुंचा।

उस राज्य का राजा बहुत ही **क्रूर** था। उसका कहना था कि नसीब जैसी कोई चीज नहीं होती है। इस राज्य की नसीब सिर्फ वह है और जो वह चाहेगा वही इस राज्य में होगा।

उसकी पुत्री राजकुमारी निशिता इससे अलग सोच रखती थी। वह कहती थी जो नसीब में होगा वही व्यक्ति को मिलेगा। राजा राजकुमारी से बहुत चिढ़ता था।

उसने उसका विवाह एक भिखारी से करने का फैसला किया। एक दिन राजकुमार अंशुमन एक पेड़ के नीचे बैठा हुआ था। उसके कपडे फट गए थे। दाढ़ी - मूंछ बढ़ गयी थी। जो कुछ उसे मिल जाता था वह खा लेता था।

राजा ने जब अंशुमन को देखा तो उससे अपनी पुत्री का विवाह उससे कर दिया और बोला देख इस राज्य में वही होता है जो मैं चाहता हूँ। राजकुमारी उसी पेड़ के नीचे राजकुमार के साथ रहने लगी।

शादी के दुसरे ही दिन जब राजकुमारी पानी लेकर वापस आई तो देखती है एक राजकुमार सोया हुआ था और उसके मुख पर एक सर्प बैठा हुआ था।

कुछ देर बाद उसकी परछाही अंशुमन के अन्दर समाने लगी। राजकुमारी ने मौक़ा देखकर तेजी से उस सर्प के मुह पर एक लकड़ी से मारा। घाव लगते ही वह सर्प घायल हो गया और राजकुमार के शरीर को छोड़कर बाहर आ गया।

बाहर आते ही उसका रूप बदलने लगा और वह **परीलोक** के युवक के रूप में परिवर्तित हो गया। उसके बाद उसने कहा, " राजकुमारी निशिता, आप धन्य हैं। आज आपके वजह से मैं **शापमुक्त** हुआ हूँ। मुझे इसी दिन का इन्तजार था। मैं आपको ढेर सारा धन देता हूँ। "

उसके बाद वह परीलोक वापस चला गया और अंशुमन की भी नींद खुल गयी। अंशुमन को काफी हल्का महसूस हो रहा था। तब राजकुमारी ने उसे सारी बात बता दी।

उसके बाद अंशुमन ने कहा कि वह भी राजकुमार है और राजकुमार राजकुमारी संग अपने राज्य लौट आया। जब उसके पिता को यह समाचार मिला तो बहुत खुश हुए।

उनकी ख़ुशी तब और बढ़ गयी जब उन्हें पता चला कि सांप का साया अब हट गया है। राजा ने राजकुमार को राज्य का उत्तराधिकारी घोषित कर दिया।

जब यह बात राजकुमारी निशिता के पिता को पता चली तो वह भी मानने लगा कि जो कुछ होता है नसीब में लिखा होता है। मनुष्य केवल कर्म करता है और उसके बाद वह भी न्यायपूर्वक राज्य चलाने लगा।